2 नवम्बर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
# पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**किसी भी प्रकार के वाद -विवाद में नहीं उलझना ही आत्मार्थ है, आत्मार्थीपने की सच्ची निशानी है।**

ह्न पंचकल्याणक प्र. महोत्सव, पृ.62

**वर्ष : 30, अंक :** 15 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

# दसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

**जयपुर (राज.) :** पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर में दिनांक 17 से 26 अक्टूबर, 2007 तक दसवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन बुधवार, दिनांक 17 अक्टूबर को प्रात:8.00 बजे श्री अजितभाई जैन (डायरेक्टर-धारीवाल इंडस्ट्रीज, बड़ौदा) के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर, श्री राजकुमारजी काला जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, श्री अजितकुमारजी तोतूका जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, डॉ. पी. सी. जैन जयपुर मंचासीन थे।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री संदीपजी शाह लंदन व प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्रीमती मीनादेवी भागचंदजी कालिका उदयपुर के करकमलों से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा द्वारा ट्रस्ट का परिचय दिया गया। अन्य विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में वर्तमान समय में शिविरों की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना से लेकर आज तक चल रही गतिविधियों का उद्देश्य एकमात्र तत्त्वप्रचार ही बताया।

साथ ही ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष स्व. श्री पूरणचंदजी गोदीका के समर्पण एवं तत्त्वप्रचार की भावना का स्मरण दिलाते हुए संस्था की रीति-नीति से जन सामान्य को अवगत कराया तथा अंत में यही भावना व्यक्त की कि गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित यह तत्त्वज्ञान अनेक माध्यमों से घर-घर पहुँचे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री निहालचंदजी जैन ने कहा कि शिविरों के माध्यम से ही तत्त्वप्रचार-प्रसार की अविरल धारा अनवरत रूप से चलती रह सकती है।

आपके अतिरिक्त श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री राजकुमारजी काला जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, श्री हीराचंदजी बोहरा जयपुर ने भी सभा को सम्बोधित किया।

सभा का संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया तथा मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया।

शिविर में प्रतिदिन आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथ की सातवीं गाथा से लेकर दसवीं गाथा तक मार्मिक प्रवचन हुए। आपके प्रवचन से पूर्व प्रतिदिन भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में द्वितीय प्रवचन के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रिकालीन प्रथम प्रवचन से पूर्व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. नरेन्द्रजी जयपुर, पण्डित सुदर्शनजी बीना, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुंबई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के सुश्राव्य प्रवचनों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा नयचक्र (निश्चयनय : प्रश्नोत्तर), पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. यशपालजी द्वारा मोक्षमार्ग की पूर्णता एवं गुणस्थान विवेचन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सैंतालीस नय एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री द्वारा क्रमबद्ध पर्याय पर कक्षा ली गई। इसके अतिरिक्त पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री मुम्बई द्वारा अंग्रेजी भाषा में विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया तथा बालकक्षायें डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई के निर्देशन में लगाई गई।

प्रात: 5.30 बजे की प्रौढ़ कक्षा में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा,

**(शेष पृष्ठ - 5 पर ...)**

सम्पादकीय –

## मोय सुन–सुन आवे हाँसी

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

'जन्म से अन्धा और नाम नयन सुख' कहावत को चरितार्थ करनेवाले 'दुखिया' का नाम उसके पिता ने पता नहीं क्या सोच कर 'सुखानन्द' रखा होगा; जबकि उसका जन्म तो रोते–रोते हुआ ही, बचपन में ही माँ के दिवंगत हो जाने से बेचारे का बचपन भी दु:खमय ही रहा।

पिता की गरीब स्थिति के कारण न तो ढंग से पालन–पोषण हुआ और न पढ़ाई ही पूरी हो सकी। इसतरह न शारीरिक विकास हो सका और न बौद्धिक विकास ही हुआ।

किशोर अवस्था में सुख की तलाश में यत्र–तत्र भटकते हुए संयोग से वह दु:खिया एक दिन नदी के किनारे बने एक योगी के आश्रम में जा पहुँचा। योगी ने उसे सुपात्र जानकर सांसारिक सुख के सन्दर्भ में बताया कि ह्न **पहले में पहला सुख निरोगी काया ही है;** क्योंकि निरोगी काया में ही मानसिक और बौद्धिक विकास होता है, प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण जिसकी कमी तुम में अभी है। अत: तुम सर्वप्रथम नियमित योगासन, प्राणायाम और संतुलित आहार के द्वारा अपने तन–मन को दुरुस्त रखो और प्रसन्न रहो। सब ठीक हो जायेगा। तुम चाहो तो एतदर्थ आश्रम में रह कर यह काम कर सकते हो, पर तुम्हें इस कार्य के बदले में अपनी सेवायें आश्रम को देनी होंगी।''

योगीजी ने आसन–प्राणायाम के और भी ऐसे अनेक लाभ बताये, जिनसे छोटी–मोटी बीमारियों से भी बचा जा सकता है।

बस, तभी से सुखानन्द ने योगासन और प्राणायाम करने का संकल्प तो कर लिया; पर पिता की बीमारी के कारण वह वहाँ अधिक नहीं रुक सका । अतः प्राणायाम की पद्धति सीखने के बाद कुछ दिन रहकर ही उसे वृद्ध बीमार पिता की सेवा के लिये योगी के आश्रम से घर आना पड़ा।

परन्तु उसने निरोगी काया को ही सुख का साधन मानकर और प्राणायाम को ही धार्मिक क्रिया मानकर अन्य सभी धार्मिक क्रियाओं को गौण कर दिया, जबकि प्राणायाम मात्र स्वास्थ्यलाभ का ही अभियान है। धर्म से इसका कुछ भी सम्बंध नहीं है।

ह्न ह्न ह्न

जब आसन और प्राणायाम करते–करते भी उसे अनेक रोग हो गये तो वह दौड़ा–दौड़ा योगीजी के आश्रम में यह जानने के लिये पुन: पहुँचा कि कहीं मेरे आसन–प्राणायाम की विधि में कोई त्रुटि तो नहीं हो रही है; परन्तु आश्रम में पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि योगीजी तो स्वयं अस्पताल में भर्ती हैं। उन्हें ब्लड कैंसर हो गया है एवं लकवे का असर भी हो गया है।

सुखानन्द को योगीजी के प्रति प्रेम तो हो ही गया था। अत: वह न केवल सहानुभूति दिखाने के लिये; बल्कि यह जानने के लिये भी अस्पताल पहुँचा कि ह्न ऐसे संयमी योगी व्यक्ति को ऐसी बीमारी कैसे हो गई ? और ऐसे संकट के समय मैं उनके किस काम आ सकता हूँ ?

सुखानन्द ने अस्पताल पहुँचकर सान्त्वना देते हुए योगीजी से पूछा ह्न ''योगीजी, आपको यह क्या हो गया ? आपका तो नारा ही यह था कि **'योग भगाये रोग।'** आप तो पूरे आत्मविश्वास के साथ यह कहा करते हैं कि ह्न योग से सभी रोग दूर किये जा सकते हैं। इसीकारण आप योग की साधना में इतने तन्मय हो गये कि आपने अपने गृहस्थ जीवन को योग में बाधक मानकर शादी तक नहीं की, गृहस्थी ही नहीं बसाई; जबकि पत्नी जैसी समर्पित भाव से सेवा करती है, दु:ख के दिनों में साथ देती है, समय पर शुद्ध सात्विक भोजन–पान कराती है, वैसी सुविधाओं की आशा और अपेक्षा अन्य किसी से नहीं की जा सकती, फिर भी आपने शादी नहीं की। योगसाधना से समर्पण की भावना से आपका यह त्याग प्रशंसनीय कहा जा सकता है, परन्तु व्यक्तिगत रूप से कष्टकारक तो है ही। अस्तु मेरे योग्य सेवा आप अवश्य बतायें।''

योगीजी अस्पताल में अकेले पड़े कराह रहे थे। उस संकटकाल में माँ और पत्नी की भाँति समर्पित भाव से सेवा करनेवाला तो वहाँ कोई था नहीं तथा औषधोपचार के लिए धन की भी पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी; क्योंकि योगी होने के कारण में उन्होंने अपने लिए धनार्जन की भी परवाह नहीं की थी।

योगीजी लड़खड़ाती जबान से बोले ह्न ''भैया! जब पूर्वोपार्जित पुण्य क्षीण हो जाता है और असाता कर्म का उदय आता है तब अकेले आसन और प्राणायाम व्यक्ति को निरोग नहीं रख सकते। अत: स्वास्थ्य लाभ के लिए योगासन–प्राणायाम करने के साथ स्वतंत्र आजीविका के लिए न्याय–नीति से धनार्जन करना तथा गृहस्थावस्था में अपने परिवार के साथ जीवन–यापन करना ही सर्वोत्तम है।

यद्यपि पैसा ही सब कुछ नहीं है, अत: अन्याय–अनीति से धनार्जन तो नहीं करना चाहिए; परन्तु गृहस्थ जीवन में तो पैसा भी बहुत कुछ है; क्योंकि सांसारिक जीवन में धन के बिना भी तो काम नहीं चलता। अतः न्याय–नीति से धनार्जन भी करना चाहिए ह्न यह बात मेरी समझ में आ अब आई है।

देखो न! आज औषधोपचार के लिये जितना पैसा चाहिए, उतना नहीं है तो किस के सामने हाथ पसारें ?'

ह्न ह्न ह्न

फिर क्या था, योगीजी की विषम परिस्थितियों से सबक सीखकर सुखानन्द ने योग के साथ सत्कर्म करने का संकल्प तो किया ही, धनार्जन पर भी पूरा–पूरा ध्यान दिया। पुण्ययोग से पैसा भी खूब हो गया और स्वास्थ्य भी ठीक हो गया; परन्तु सुखानन्द फिर भी सुखी नहीं हुआ; क्योंकि पत्नी के अभाव में इतना श्रम करने पर भी उसे दिन में दो बार सुख से गरम–गरम रोटियाँ समय पर मिल जायें, इसकी व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। इसकारण अब उसे पत्नी, पुत्र एवं परिवार की कमी खटकने लगी।

उसे ऐसा लगा कि जब अर्जित धन का उपयोग करने/करानेवाला ही कोई न हो, सुख के साधन जुटानेवाला ही कोई न हो, तो ऐसे धन से भी क्या लाभ ?

यदि संसार में **पहला सुख निरोगी काया** और **दूसरा सुख घर में माया** अर्थात् धन का होना जरूरी है, तो नि:संदेह तीजा सुख **कुलवती नारी और चौथे सुख के रूप में आज्ञाकारी पुत्र का होना भी अनिवार्य** है। इनके बिना भी पारिवारिक सुख संभव नहीं है। यह सोचकर उसने शादी कर ली और भाग्योदय से दो वर्ष में ही घर में किलकारियाँ भरता कुल की शोभा बढ़ाता हुआ पुत्र भी हो गया।

अब तो उसे ऐसा लगने लगा मानो मुझे सब सुखों की निधियाँ मिल गयी हों। परन्तु यह अनुकूलता भी क्षणिक ही है। अब उसे पुत्र को लाड़–प्यार से लालन–पालन करने और पढ़ाने–लिखाने तथा अच्छे सदाचार के संस्कार डालने की चिन्ता सताने लगी।

ह्न ह्न ह्न

पत्नियों के भी कुछ स्वप्न होते हैं, जिसे वे शादी के पहले से ही संजोए रहती हैं और शादी के पश्चात् पति के सहयोग से उन्हें पूरा करने के लिए आशान्वित रहती हैं।

सुखानन्द की पत्नी भी इसका अपवाद नहीं थी। उसे भी वे सब अपेक्षायें अपने पति से पूरी करने की प्रतीक्षा थी। अवसर पाते ही पत्नी के द्वारा बहुमूल्य वस्त्र, अतिमूल्यवान आभूषण और नाना प्रकार की भोगोपभोग सामग्री की ऐसी–ऐसी फरमाइशें होने लगी, जिनकी पूर्ति करना प्रथम तो सुखानन्द के सीमित बजट में संभव ही नहीं था। दूसरे, योगीजी के सम्पर्क में रहने से 'सादा जीवन उच्च विचार' का आदर्श उसके रोम–रोम में समा गया था। इसकारण पत्नी की कल्पनातीत अपेक्षाओं की पूर्ति करने को वह मानसिक रूप से तैयार भी नहीं हो पा रहा था।

सुखानन्द ने योगीजी से यह सुना था कि व्यक्ति को सुखी रहने के लिये अपने सीमित साधनों में सन्तुष्ट रहना चाहिए। अन्यथा **प्रत्येक प्राणी का आशारूपी गड्ढा इतना बड़ा है कि सारे विश्व का वैभव उस गड्ढे के** एक कोने में पड़ा रहेगा। अत: विषयों की तृष्णा व्यर्थ है।

इसप्रकार की मानसिकता के कारण सुखानन्द अपनी पत्नी की भावनाओं की पूर्ति नहीं कर पाने से वह आकुलित रहने लगा।

इस तरह सब लौकिक सुख–सुविधायें पाने के बाद भी सुखानन्द के सामने सच्चा सुख पाने की समस्या ज्यों की त्यों खड़ी रहीं।

संयोग से एक दिन वह उसी नदी के तटवर्ती पर्वत की गुफा में सच्चे सुख की साधना करनेवाले आध्यात्मिक संत की शरण में जा पहुँचा और उसने संत से हाथ जोड़कर निवेदन किया ह्न'हे गुरुदेव! यद्यपि मेरे पिता ने मेरा नाम सुखानन्द रखा है, पर मुझे जीवन में किंचित् भी सुख नहीं मिला। मैं सुख की तलाश में बहुत भटका हूँ ,जिसने जहाँ सुख बताया, उसे पाने के लिये मैंने कोई कसर उठाकर नहीं रखी; फिर भी मैं सुखी नहीं हुआ।

जब मुझे पता चला कि आप ज्ञानी हैं , स्वयं तो सुखी हैं ही, दूसरों को भी सुख का सन्मार्ग सदैव बताया करते हैं, तो मैं तुरंत आप की खोज करते हुए आप की शरण में आया हूँ।'

ह्न ह्न ह्न

संत साधारण पुरुष नहीं थे, उन्होंने संसार सागर का किनारा पा लिया था। अब उनके पास परहित के कार्यों में अटकने को एक क्षण का भी समय नहीं था। अत: उन्होंने सुखानन्द को उसकी समस्या के समाधान के लिये मीना नाम की मछली से मिलने को कहा तथा उसका पता बता दिया और स्वयं ध्यानस्थ हो गये।

संत ने मीना मछली का परिचय देते हुए कहा कि ह्न''यद्यपि मीना तिर्यंचगति में है व जलचर प्राणी है तथापि संज्ञी पंचेन्द्रिय है, ज्ञानी है, मेरी भी परोक्ष रूप से प्रथम गुरु वही है।''

सुखानन्द की समझ में यह नहीं आ रहा कि मेरी इतनी जटिल समस्या का समाधान एक जलचर जीव कैसे कर सकेगा ? परन्तु वह इतना साहस नहीं जुटा पा रहा था कि वह संत का ध्यान भंग कर उनसे पुन: पूछे। अत: उसने सोचा ह्न 'चलो चलते हैं, संभव है संत का इसमें भी कोई रहस्य छिपा हो। संतों के हृदय का रहस्य पाना भी तो कोई सहज नहीं है।'

फिर क्या था, सुखानंद उस असमंजस में ही मीना मछली का पता पूछते–तलाशते उसके पास पहुँच गया और संत के नाम का उल्लेख करते हुए बोला ह्न हे मीना ! तुम मुझे बताओ कि सच्चा सुख कहाँ है ? कैसे प्राप्त होगा ?

उत्तर में मीना मछली ने संकेत की भाषा में सुखानन्द से कहा ह्न ''मुझे जोर की प्यास लगी है। मेरा गला सूख रहा है। अत: पहले तुम कहीं से एक लोटा पानी ला दो, तभी मैं तुम्हें सुखी होने का उपाय बता सकूँगी।''

मछली की यह अटपटी बात सुनकर सुखानन्द आश्चर्यचकित तो हुआ ही, उसे हँसी भी आ गई। वह इतना हँसा....इतना हँसा कि हँसते–हँसते लोट–पोट हो गया। आँखों में आँसू तक छल–छला आये। उसे हँसता देखकर मछली और भी जोर–जोर से खिल–खिलाकर हँसने लगी। मछली को इसतरह खिल–खिलाकर हँसता देख सुखानन्द ने गंभीर होकर मछली से पूछा ह्न 'तुम क्यों हँस रही हो?'

मछली ने कहा ह्न ''जिसकारण तुम हँस रहे हो, उसीकारण मुझे हँसी आ रही है। यदि पानी में आकंठ निमग्न रहने पर मैंने स्वयं को प्यासा बताया और तुमसे बाहर से पानी लाने को कहा तो तुम्हें मुझ पर हँसी आ गई तो तुम भी तो सुख के सागर में आकंठ निमग्न हो, सुख गुण से लबालब भरे हो, सुख और आनन्द के ही घनपिण्ड हो, इसीकारण तो तुम्हारे पिता ने तुम्हारा नाम सुखानन्द रखा है; फिर भी तुम सुख के लिये इधर–उधर भटक रहे हो, भोगों के भिखारी बन गये हो। जब वहाँ कहीं भी सुख नहीं मिला, तो सुख पाने के लिये संत की शरण में जा पहुँचे।'

अरे भाई! वह सन्त भी एक दिन सुख की तलाश में तुम्हारी तरह ही

**(शेष पृष्ठ – 7 पर ...)**

# मूक जीवों की चीत्कार सुननेवाला कौन ?

## मानव होकर भी इतनी निर्दयता क्यों ?

- **क्या आपको जैन कहलाने का अधिकार है ?**
- **क्या आप भगवान महावीर को मानते हैं ?**
- **क्या आपके हृदय में करुणा है ?**
- **क्या आप मुनिराजों की वाणी पर श्रद्धा करते हैं ?**

**यदि हाँ तो –**

- पटाखे फोडकर अनंत जीवों की हत्या करके आप क्या बताना चाहते हैं ?
- ''जियो और जीने दो'' का अमर संदेश देनेवाले भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस पर हिंसा का ताण्डव मत करिये। हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों का मरण करने पर दया क्यों नहीं आती ?

## जरा सोचिये ह्न पटाखे फोड़ने से क्या मिलेगा ?

**1. अनंत निर्दोष जीवों की हत्या। 2. वायु प्रदूषण एवं आग लगने से क्षति। 3. स्वास्थ्य हानि।**
**4. करोड़ों रुपयों का नुकसान। 5. भगवान की वाणी का अपमान। 6. गंदगी का साम्राज्य।**
**7. आँखों पर बुरा असर। 8. मुनिराजों के उपदेशों की अवहेलना। 9. अनंत पाप का बंध।**

**क्या आप जानते हैं ?** प्रतिवर्ष पटाखो से २ लाख लोग अपंग होते हैं, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष २०० करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान होता है, पटाखों से प्रतिवर्ष ७० हजार बच्चों के आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है, पटाखा फैक्ट्री के कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है।

**अत: हमें ही सोचना है कि यह अहिंसा के सम्राट का निर्वाण महापर्व है या हिंसा के यमराज का ?**

**निवेदक –** आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.) सर्वोदय, 702, फूटाताल जबलपुर–2 (म.प्र.) मो. 093009 73705

**पाठकों के पत्र...**

## काफी उत्साह आया !

आचार्य कुन्दकुन्द विरचित ग्रंथराज समयसार पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका को पढ़कर **खनियांधाना से पण्डित संजयजी** पुजारी लिखते हैं कि ह्न

'वर्तमान में मैं ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका के माध्यम से समयसारजी ग्रंथ का स्वाध्याय कर रहा हूँ, बहुत आनन्द आ रहा है। पूर्व में हालंकि जयचंदजी छाबड़ा द्वारा लिखित टीका के माध्यम से भी स्वाध्याय किया पर स्वयं की ही कमजोरी कहें कि बात ख्याल में तो आयी पर स्पष्ट न हो सकी थी; पर अब पढ़ने में काफी उत्साह आता है एवं बात भी काफी स्पष्ट होती जा रही है।

मैंने अभी बीच के प्रकरण से बढ़कर सीधे 47 शक्तियों के स्वरूप को देखा, वह भी पूरी तरह से स्पष्ट हुआ है। इस हेतु मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ।'

## पाठशाला पुनर्जीवित

**मुम्बई :** डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया के निर्देशन में बोरीवली (मुम्बई) में श्री कुणालकुमार शाह और कु. मेघा शाह के विशेष प्रयत्नों से पाठशाला को पुनर्जीवित किया गया। वर्तमान में इस पाठशाला में 125 बच्चे तत्त्वलाभ ले रहे हैं। पाठशाला में आने की सुविधा हेतु वहाँ पाठशाला– बस चलाई जा रही है।

## टोडरमल स्मारक की वेबसाइट लाँच

**जयपुर :** यहाँ शिक्षण–शिविर के मध्य दिनांक 21 अक्टूबर,07 रविवार को रात्रि में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने इन्टरनेट पर अपनी नवनिर्मित वेबसाइट www.jaintodarmalsmarak.com को लाँच किया। श्री संदीपजी शाह लंदन एवं श्री दिलीपजी शाह मुम्बई ने अपने करकमलों से इस वेबसाइट का उद्घाटन कर शिविरार्थियों के सामने इसका प्रदर्शन किया। इस अवसर पर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने लोगों को इन्टरनेट व वेबसाइट के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी प्रदान की तथा कु. मुक्ति जैन ने www.jaintodarmalsmarak.com का संक्षिप्त परिचय दिया। ज्ञातव्य है कि आपने ही अथक् परिश्रम करके श्री समकित शाह मुम्बई के सहयोग से इस वेबसाइट का निर्माण किया है।

अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि हमें टी.वी एवं इंटरनेट जैसी चीजों का निषेध न करके यह सोचना चाहिये कि इनका उपयोग तत्त्वप्रचार के लिये कैसे किया जा सकता है ? वर्तमान में युवाओं में बहती हुई धारा को बदलना संभव नहीं है। अत: आधुनिक सुविधाओं एवं संचार माध्यमों का निषेध नहीं; दिशा बदलकर हम और अधिक तत्त्वप्रचार कर सकते हैं; अत: गंगा को बंगाल की खाड़ी से हिमालय पर ले जाने का प्रयास न करें।

( पृष्ठ – 1 का शेष ...)

पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा, पण्डित सुदर्शनजी जैन बीना एवं डॉ.दीपकजी जैन जयपुर का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यानमाला में डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई, श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया, पण्डित रमेशचंदजी जैन लवाण, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धनकुमारजी शास्त्री तमिलनाडू, पण्डित संजयकुमारजी सेठी जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर की व्याख्यानमाला से पूर्व प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सी. डी. प्रवचनों का प्रसारण किया जाता था।

शिविर में आयोजित श्री चौंसठ ऋद्धि विधान के आयोजनकर्त्ता स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी रतनदेवी एवं सुपुत्र श्री अशोक पाटनी कोलकाता थे।

शिविर के मध्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से प्रकाशित सुखी होने का उपाय भाग–1, भाग–5, भाग–7, मोक्ष मार्ग की पूर्णता, ये तो सोचा ही नहीं, विचित्र महोत्सव, अहिंसा के पथ पर, अध्यात्म संदेश नामक विविध पुस्तकों का विमोचन किया गया। साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में तैयार की गई बालगीतों की सी. डी.' मेरा वीर बनेगा बेटा' का विमोचन भी किया गया।

दिनांक 23 अक्टूबर को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से प्रत्येक कक्षा में से चुने गये दो–दो विद्यार्थियों को आदर्श छात्र के रूप में सम्मानित किया गया। शास्त्री अन्तिम वर्ष से अभिषेक केलवाड़ा एवं प्रसन्न शेट्टे, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अनुराग भगवां एवं तपिश उदयपुर, शास्त्री प्रथम वर्ष से विवेक सागर एवं दीपेश अमरमऊ तथा उपाध्याय वरिष्ठ से रजित भिण्ड एवं जयेश उदयपुर श्रेष्ठ विद्यार्थी रहे।

25 अक्टूबर को रात्रि में शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा ने शिविर की आर्थिक रिपोर्ट एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने व्यवस्थागत रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया। शिविर में कुल लगभग 815 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर लगभग पच्चीस हजार रूपयों का सत्साहित्य तथा 2543 घंटों के सी. डी. व ऑडियो कैसिट्स घर–घर पहुँचे। वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक के अनेक सदस्य बनें। ●

## स्मारक ट्रस्ट व पाठशाला का अधिवेशन

**जयपुर :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में शिक्षण–शिविर के मध्य रविवार, दिनांक 21 अक्टूबर 2007 को दोपहर 3.00 बजे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं वीतराग–विज्ञान पाठशाला समिति का अधिवेशन रखा गया। इसका उद्घाटन डॉ. आर. के. जैन विदिशा, श्री ज्ञानचंद जी जैन एवं श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन कोटा परिवार ने किया। अधिवेशन की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विमलकुमारजी जैन (नीरू केमिकल्स) दिल्ली के अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वत्गण मंचासीन थे।

आमंत्रित समस्त अतिथियों का पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री नगेन्द्रजी पाटनी ने तिलक लगाकर माल्यार्पण से स्वागत किया।

साहित्य प्रकाशन एवं विक्रय सम्बन्धी रिपोर्ट पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा एवं तत्त्वप्रचार सम्बन्धी जानकारी ब्र. यशपालजी जैन ने दी।

भारतवर्षीय वीतराग–विज्ञान पाठशाला समिति की उपलब्धियों पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने विस्तार से प्रकाश डाला। सभा को संबोधित करते हुये श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पाठशालाओं के विकास हेतु अनेक नवीन योजनाएँ प्रस्तुत की। श्री सुमनभाई दोशी ने राजकोट में संचालित पाठशाला का परिचय दिया।

इसी अवसर पर पाठशाला के सम्पूर्ण कार्य को कम्प्यूटरीकृत रूप से व्यवस्थित करने हेतु पाठशाला के सॉफ्टवेयर डेवलपर श्री प्रकाशचंदजी जैन को सम्मानित किया गया।

अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने वर्तमान में पाठशालाओं की उपयोगिता व आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मार्मिक उद्बोधन दिया।

**पटाखा न फोड़ने वाले बच्चों को ह्न**

## अहिंसा गौरव पुरस्कार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन और अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर द्वारा दीपावली पर इस वर्ष अहिंसा गौरव पुरस्कार की योजना चलाई जा रही है। इसमें पटाखा न चलाने वाले बच्चों को संस्था की ओर से अहिंसा गौरव की उपाधि से सम्मानित करते हुये एक आकर्षक प्रमाण–पत्र दिया जायेगा और ड्रॉ द्वारा पाँच भाग्यशाली बच्चों का चयन कर; उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किया जायेगा।

पटाखे न फोड़ने वाले बच्चों को अपना नाम, मन्दिर के लैटर पेड पर मंदिर पदाधिकारी से हस्ताक्षर कराके अथवा अपने अभिभावक/पाठशाला के शिक्षक द्वारा हस्ताक्षर करवाकर निम्न पते पर भेजना होगा।

तो बच्चों ! अब आपको निर्णय करना है कि आपको पटाखे फोड़कर हिंसा का महापाप लेना है या अहिंसा गौरव का पुरस्कार।

**संयोजक ह्न** विराग शास्त्री, सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर– 482002 (म.प्र.)

तत्त्वचर्चा

## छहढाला का सार 17

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

# पाँचवा प्रवचन

**तीन भुवन में सार, वीतराग–विज्ञानता।**
**शिवस्वरूप शिवकार, नमहूँ त्रियोग सम्हारिकै।।**

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और एकदेशचारित्र की चर्चा हो चुकी है। अब सकलचारित्र के विवेचन के पहले बारह भावनाओं की चर्चा करते हैं; क्योंकि जब भी कोई व्यक्ति सकलचारित्र (मुनिधर्म) को धारण करता है, तब उसके पूर्व बारह भावनाओं का चिन्तन अवश्य करता है।

यही कारण है कि दौलतरामजी ने छहढाला में मुनिधर्म की चर्चा करने के पूर्व और देशचारित्र की चर्चा के उपरान्त बारह भावनायें रखी हैं। गृहस्थ और सन्त ह्न दोनों ही बारह भावनाओं का चिन्तन करते हैं, मध्यदीपक के रूप में एक कारण यह भी हो सकता है।

पण्डित दौलतरामजी पाँचवीं ढाल के पहले ही छन्द में लिखते हैं कि वे मुनिराज बड़े ही भाग्यवान हैं; जो सांसारिक भोगों से विरक्त हैं और जो वैराग्य की उत्पत्ति के लिये बारह भावनाओं का चिन्तवन करते हैं।

देखो, यहाँ सर्वाधिक विभूतिवाले चक्रवर्तियों को भाग्यवान नहीं कहा, अपितु सबकुछ छोड़ देनेवाले सन्तों को भाग्यवान कहा है। यह इस बात का प्रमाण है जोड़नेवाले से छोड़नेवाला महान होता है।

मुनिराज वैराग्य की उत्पत्ति के लिये बारह भावनाओं का चिन्तवन करते हैं; इसका अर्थ यह हुआ कि वह चिन्तवन ही बारह भावनाओं का चिन्तवन है कि जिससे वैराग्य की उत्पत्ति हो। अगली ही पंक्ति में वे लिखते हैं कि जिसप्रकार हवा के लगने से अग्नि प्रज्वलित हो उठती है; उसीप्रकार इन बारह भावनाओं के चिन्तन से समतारूपी सुख जागृत हो जाता है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा में इन बारह भावनाओं को आनन्द–जननी कहा गया है। इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि जो चिन्तन वैराग्य–वर्धक हो, आनन्द–जनक हो; वही चिन्तन बारह भावनाओं की श्रेणी में आता है। जिस चिन्तन से भय जागृत हो, आकुलता उत्पन्न हो; वह चिन्तन और चाहे जो कुछ हो, पर बारह भावना (अनुप्रेक्षा) तो कदापि नहीं।

उक्त सन्दर्भ में मैं कविवर पण्डित भूधरदासजी द्वारा लिखित सर्वाधिक प्रचलित बारह भावनाओं में से अनित्य और अशरण भावना सम्बन्धी छन्दों को प्रस्तुत करना चाहता हूँ; जो इसप्रकार हैं ह्न

**राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार।**
**मरना सबको एक दिन अपनी–अपनी बार।।**
**दल–बल देवी–देवता, मात–पिता परिवार।**
**मरती विरिया जीव को कोई न राखनहार।।**

उक्त दोनों भावनाओं में मृत्यु की चर्चा है। कहा गया है कि एक न एक दिन सभी को मरना होगा और हजार प्रयत्न करने पर भी कोई बचा नहीं पायेगा।

इसप्रकार 'मरना होगा' ह्न यह अनित्य भावना हुई और 'कोई बचा नहीं पायेगा' ह्न यह अशरण भावना हुई।

यदि यह पढ़ते–पढ़ते हमारे दिल में घबराहट होती है तो समझ लेना चाहिये कि यह अनित्य और अशरण भावना का चिन्तन नहीं है; क्योंकि अनित्य और अशरण भावना के चिन्तन से तो आनन्द की उत्पत्ति होना चाहिये, वैराग्य की उत्पत्ति होना चाहिये; पर हमें आनन्द और वैराग्य न होकर घबराहट होती हैं।

यद्यपि इसमें एक दिन शब्द लिखा है; तथापि क्या हम सबको एक ही दिन साथ–साथ ही मरना है ? नहीं, कदापि नहीं। एक दिन का वास्तविक अर्थ एक न होकर एक न एक दिन है। एक न एक दिन अर्थात् कभी न कभी हम सबको मरना ही होगा।

अरे भाई ! 'कभी न कभी' तो ठीक है, पर आखिर कब ?

इस प्रश्न के उत्तर में लिखा गया है कि **अपनी–अपनी बार**। तात्पर्य यह है कि जब आपका नम्बर आयेगा, तब। इसका तो सीधा–सा अर्थ यह है कि सभी का नम्बर लगा है, मरने का समय सुनिश्चित है।

यदि बात यह है तो इसका अर्थ तो यह हुआ कि दुनिया की कोई शक्ति हमें समय से पहले नहीं मार सकती। इसप्रकार यह बात मृत्यु का सन्देश नहीं, जीवन की गारंटी है।

जब हमें इस भावना के चिन्तन में मृत्यु का संदेश नहीं, जीवन की गारंटी दिखाई देगी तो फिर घबराहट क्यों होगी ? फिर तो परम सन्तोष होगा।

अभी तक तो इसे यह चिन्ता थी कि मुझे कोई मार न दे; पर उक्त चिन्तन के आधार पर जब उक्त चिन्ता कुछ कम होती है तो यह सोचने लगता है कि समय के पहले तो मैं नहीं मरूँगा; परन्तु क्या यह नहीं हो सकता है कि समय आने पर भी मेरा मरण न हो ? तदर्थ अनेक उपाय करने लगता है।

उक्त मनस्थिति से उबरने के लिये अशरण भावना में कहा गया है कि ह्न **मरती विरियाँ जीव को कोई न राखनहार।**

तात्पर्य यह है कि जब मृत्यु का समय आ जायेगा, तब दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं बचा सकती। अत: इस दिशा में सक्रिय में होने से कोई लाभ नहीं।

'समय के पहले हमें कोई मार न दे' ह्न इस भय से हमने सुरक्षा के बड़े–बड़े इन्तजाम किये हैं। किले–कोट की बात तो बहुत पुरानी हो गई; अब तो हम परमाणु हथियारों से सुसज्जित हैं और इस दिशा में प्रयत्नशील हैं कि हमें समय आने पर भी न मरना पड़े।

'समय के पहले कोई मार न दे' ह्न इसके लिए हमने बन्दूक की गोलियाँ बनाईं और 'समय आने पर भी न मर जाये' ह्न इसके लिए जीवनरक्षक (एन्टीबायोटिक) गोलियाँ बनाईं। इसप्रकार रक्षा के नाम पर मारक सामग्री का ही निर्माण किया है। यदि परमाणु हथियार प्राणिजगत का सर्वविनाश करनेवाले हैं तो ये जीवनरक्षक दवायें भी कीटाणुजगत की नाशक हैं। कैसा विचित्र संयोग है कि अमर होने के लिये मारने की व्यवस्था, क्या इसी का नाम सुरक्षा है ?

जब अनित्य और अशरण भावना के चिन्तन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि न तो समय के पहले कोई हमें मार ही सकता है और न समय आने पर कोई बचा ही सकता है; तब हमें न तो कोई भय का कारण रह जाता है और न स्वसमय में होनेवाले मरण से बचने के लिए कुछ करने को ही रह जाता है; फिर चिन्ता किस बात की ?

इसप्रकार ये दोनों भावनायें मरणभय पैदा करनेवाली नहीं, मरणभय को दूर करनेवाली भावनायें हैं।

इस छहढाला में भी कहा है कि ह्न

**जोबन गृह गोधन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी।**
**इन्द्रिय–भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई।।**
**सुर असुर खगाधिप जेते, मृग ज्यों हरि काल दले ते।**
**मणि मन्त्र–तन्त्र बहु होई, मरतैं न बचावे कोई।।**

जवानी, घर, गाय–भैंस आदि गोधन, स्त्री, हाथी–घोड़ा, आज्ञाकारी सेवकजन और इन्द्रियों की भोगसामग्री ह्न इन्द्रधनुष और आकाश में चमकनेवाली बिजली के समान क्षणभंगुर हैं।

जिसप्रकार भयंकर वन में सिंह पशुओं को मार डालता है; उसीप्रकार जितने भी देव, दानव और विद्याधरों के राजा हैं; वे सब कालरूपी यमराज से दले जाते हैं, मसले जाते हैं, मार दिये जाते हैं। इस जगत में चिन्तामणि रत्न, मन्त्र–तन्त्र बहुत हैं; पर मरने से कोई नहीं बचा सकता।

प्रत्येक वस्तु स्वभाव से नित्य है तो पर्याय से क्षणभंगुर (अनित्य) भी है। यदि मूल वस्तु कभी नहीं बदलती है तो सदा एकसी भी नहीं रहती। न बदलकर भी बदलती है और बदलकर भी नहीं बदलती।

इसीप्रकार यह आत्मा मरकर भी अमर है और अमर होकर भी मरणशील है। कभी न बदलने के समान निरन्तर बदलते रहना भी इसका स्वभाव है।

अरे भाई ! यह निरन्तर बदलते रहने वाला स्वभाव भी हमारे हित में ही है; क्योंकि यदि हम बदलेंगे नहीं तो फिर मोक्ष में कैसे जायेंगे ? यदि हम मरेंगे नहीं तो इस सड़ी–गली देह से छुटकारा कैसे मिलेगा ?

यदि हम इसी पर्याय में जमे रहेंगे तो हमें नई पर्याय कैसे मिलेगी और हमारी आगामी पीढ़ी भी कैसे आयेगी ?

अत: हमें 'समय पर जन्मना और समय पर मरना' ह्न इस परम सत्य को सच्चे दिल से स्वीकार करना चाहिये; क्योंकि नित्यता के समान अनित्यता भी वस्तु का स्वभाव है। जो स्वभाव हो, वह दु:खरूप या दु:खकर कैसे हो सकता है ?

मैंने बहुत पहिले लिखा था कि ह्न

**जब अनित्यता वस्तुधर्म तब क्यों कर दुखकर हो सकती।**
**जब स्वभाव ही दुखमय तो सुखमयी कौनसी हो शक्ति।।**
**हम निशदिन मरते रहते हैं,**
**दिनरात गुजरते रहते हैं, हम निशदिन मरते रहते हैं।।**
**उत्पाद–नाश जब एक वस्तु तब क्योंकर मृत्यु से डरना।**
**अरे जन्म से खुशी और यह मृत्यु देखकर रो पड़ना।।**
**यह परम सत्य स्वीकार नहीं, हम किस विचार में रहते हैं।**
**दिन–रात गुजरते रहते हैं, हम निशदिन मरते रहते हैं।।**

कुछ लोग कहते हैं कि बार–बार मृत्यु की चर्चा करके हमारा यह सुखमय जीवन क्यों खराब कर रहे हैं। अरे भाई ! जब मरेंगे, तब मर जायेंगे; अभी तो मौजमस्ती से रहने दो, प्राप्त सुखों को शांति से भोगने दो।

उनसे कहते हैं कि भाई ! इस असार संसार में सुख है ही कहाँ ? यहाँ तो दु:ख ही दु:ख है, रंचमात्र भी सुख नहीं है। यह बात तो पहली ढाल में ही स्पष्ट कर आये हैं। **(क्रमश:)**

**( पृष्ठ – 3 का शेष ...)**

मारा–मारा फिरता था। वह भी यहाँ आया था। मैंने उससे भी पानी मंगाया था तो वह भी ऐसा ही हँसा था और उसने कहा था कि '**मोय सुनि–सुनि आवे हाँसी, पानी में मीन प्यासी।**' तब मैंने उससे भी यही सब कहा था और फलस्वरूप अब उसने अपने को जानकर, पहचानकर अपनी सुखनिधि को पा लिया है। यद्यपि अब वह संत बन गया है, परन्तु जब यहाँ आया था, तब संत नहीं था, फिर भी उसने अन्तर्मुख होकर सच्चे सुख का आंशिक आनन्द प्राप्त कर लिया है। यदि तुम भी अन्तर्मुख होकर उस सुख के सागर स्वरूप अपने आत्मा को जानो, पहचानो क्षणभर उसमें डूब जाओ तो पर्याय में तुम भी सच्चे सुख का स्वाद पा लोगे।

ह्न ह्न ह्न

मछली ने एक बुढ़िया की कहानी सुनाते हुए आगे कहा ह्न'एक बुढ़िया थी। वह घर के बाहर अंधेरे में कुछ खोज रही थी। वहाँ से एक लड़का निकला। लड़के ने यों ही कौतूहलवश उस बुढ़िया से पूछ लिया ह्न 'अम्मा! क्या खोज रही है ?'

अम्मा ने कहा ह्न 'बेटा! सुई खोज रही हूँ।'

लड़के ने आश्चर्य की मुद्रा में कहा ह्न 'सुई जैसी चीज और वह भी अंधेरे में! अरे अम्मा! उजेले में खोज उजेले में।'

अम्मा उस लड़के की बात मानकर पास ही में जो रोड़लाइट का उजाला था, वहाँ जाकर सुई खोजने लगी।

थोड़ी देर में वही लड़का जब लौट कर आया और उसने रोड़लाइट के नीचे उसी अम्मा को पुन: कुछ खोजते हुए देखा, तो और भी आश्चर्यचकित होकर बोला ह्न 'अरी अम्मा! यहाँ क्या खोज रही है ?'

'अरे बेटा! मेरी खोई हुई सुई नहीं मिल रही है।'

'अम्मा तेरी कितनी सुई खोई हैं ? अभी वहाँ खोज रही थी, अब यहाँ खोज रही है ह्न लड़के ने पूछा।'

अम्मा बोली ह्न 'अरे बेटा एक लड़का यहाँ से निकला, उसने कहा – अम्मा सुई को उजाले में खोज; सो अब मैं यहाँ उजाले में खोज रही हूँ।'

'अरी अम्मा! वह लड़का और कोई नहीं, मैं ही था। तू मेरी बात को समझ नही पायी। मेरा कहने का मतलब तो यह था कि जहाँ सुई खोई है, वहाँ उजाला लाकर खोज! जब रोड़लाइट के नीचे सुई खोई ही नहीं, तो फिर वहाँ मिलेगी कैसे?'

अम्मा ने कहा ह्न'अब समझी कि जहाँ सुई है ही नहीं, वहाँ खोजने से क्या होगा? जहाँ सुई गिरी है, वहीं उजाला लाकर खोजना होगा।

यह कहानी सुनाकर मीना मछली ने कहा ह्न 'हम उस अम्मा से कम समझदार थोड़े ही हैं, उस अम्मा की भाँति ही सारे अज्ञानी प्राणी जहाँ सुख का सागर है, वहाँ न खोजकर उस सुख को कभी काया में, कभी माया में तो कभी स्त्री–पुत्र–परिवार में खोज–खोज कर परेशान हैं। जब उनमें सुख है ही नहीं तो मिलेगा कैसे। अरे! सुख का सागर तो अपना आत्मा, कारण परमात्मा है।'

मछली से यह समाधान सुनकर सुखानन्द आनन्द विभोर हो गया।●

2 नवम्बर 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

## पाठशाला निरीक्षण सम्पन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सुरेशकुमार काले राजुरा द्वारा अक्टूबर माह में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की विभिन्न पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। आपने प्रत्येक गांव में दो-दो दिन रुककर प्रवचन, पूजन तथा ज्ञानवर्धक विभिन्न कार्यक्रम करवाये।

आपके द्वारा पाठशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बहुत समय से बंद पड़ी हुई पाठशालाओं को फिर से चालू करवाया तथा पाठशालाओं को नियमित चालू रखने हेतु समाज के वरिष्ठ लागों को प्रेरित किया गया। आपने फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, सिरसागंज, जसवन्तनगर, इटावा, करहल, मैनपुरी, भौगांव, कुरावली, कायमगंज, अलीगंज, एटा, एत्मादपुर, आगरा, भिण्ड, अमायन, मौ, गोरमी एवं गोहद का दौरा किया ।

इससे पूर्व भी सितम्बर में आपके द्वारा राजस्थान के विभिन्न स्थानों की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया था।

## नवीन वीडियो सी.डी.- मेरा वीर बनेगा बेटा..

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा बच्चों के लिये तैयार बालगीत वीडियो **जैनी बच्चे सच्चे हम** और **हम होंगे ज्ञानवान** की अपार लोकप्रियता के बाद संस्था ने अगले पुष्प के रूप में नवीन वीडियो सी.डी. **मेरा वीर बनेगा बेटा** प्रस्तुत की है। इस वीडियो सी.डी. में कुल 11 गीत धार्मिक और ज्ञानवर्द्धक 11 गीत हैं। इस वीडियो की शूटिंग गुना, अशोकनगर, जबलपुर, अतिशयक्षेत्र बजरंगगढ़ आदि स्थानों पर की गई है। इन गीतों की रचना ब्र.सुमतप्रकाशजी जैन, ब्र. समता झांझरी उज्जैन, जैन युवा फैडरेशन उज्जैन, पण्डित विराग शास्त्री जबलपुर, श्री संजय ज्ञानचंदजी जैन जबलपुर द्वारा की गई है। इसका निर्देशन श्री विराग शास्त्री जबलपुर ने किया है।


## स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

**डॉ. पीयूष त्रिवेदी** (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

**समय :** सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

**नोट**-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।


## वैराग्य समाचार

01. जैन समाज चंदेरी के प्रमुख समाजसेवी एवं कांग्रेस नेता श्री **श्रेयांस कुमार कठरया** का दिनांक 8 अक्टूबर, 07 को 52 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप राजनीति एवं समाजसेवा में नगर के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए पद्मकीर्ति जैन हायर सैकन्ड्री स्कूल के संस्थापक रहे। आपके निधन पर अनेक संस्थाओं ने श्रद्धांजली अर्पित की।

02. **नई दिल्ली :** वरिष्ठ पत्रकार और जैनसमाज के प्रमुख समाजसेवी श्री पारसदास जैन का दिनांक 30 सितम्बर, 07 को 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने मृत्यु से न डरकर शांतिपूर्वक देह त्याग किया। आप दिगम्बर जैन परिषद, दिगम्बर जैन महासमिति, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इत्यादि अनेक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े थे।

03. **बीना निवासी पण्डित लखमीचंदजी** का दि. 9 अक्टूबर, 07 को 72 वर्ष की अवस्था में शांत परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अच्छे स्वाध्यायी एवं प्रवचनकार थे तथा सोनगढ़ और जयपुर में आयोजित होनेवाले शिविरों में नियमित रूप से उपस्थित रहते थे।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 1001/- रूपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद !

04. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में शास्त्री तृतीय वर्ष में अध्ययनरत विद्यार्थी **तमिलनाडू निवासी वी. रमेश जैन के पिता श्री बी. विजयकीर्ति जैन** का दिनांक 7 अक्टूबर, 07 को 70 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही हमारी मंगल कामना है।

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
**फोन :** (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
**फैक्स :** (०१४१) २७०४१२७